This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

आतंकवाद के बहाने उर्फ़ पोटो मेरा नाम

;जन नाट्य मंचऋ जनवरी २००२ऋ ६ कलाकारऋ ३० मिनटाद्ध

पात्र विभाजन

१. मदारी
२. जमूरा
३. अमरीका / पोटो
४. इंग्लैंड / मंत्री
५. तालिबान / पुलिस
६. जनता

[जमूरे का प्रवेश, छिप जाता है।]

मदारी : जमूरे ओ जमूरे अबे कहां मर गया। साला तमाशे के वक़्त भाग जाता है *[जनता से पूछता है।]*

मदारी : अच्छा तो यहां छिपकर बैठा है अबे बाहर निकल और तमाशा दिखा।

जमूरा : नहीं।

मदारी : तमाशा नहीं दिखाएगा तो भूखा मरेगा क्या?

जमूरा : नहीं।

मदारी : चुपचाप से चद्दर उठा और लेट जा।

जमूरा : नहीं।

मदारी : क्या नहीं-नहीं की रट लगा रखी है।

जमूरा : उस्ताद पब्लिक अब तेरे मेरे खेल में इंटरेस्टिड नहीं है। अब ये बड़े-बड़े मदारियों का खेल देख रही है, तेरी क्या बिसात।

मदारी : क्या बकता है?

जमूरा : बकता नहीं उस्ताद सच कह रहा हूं। ये इंटरनेशनल मदारियों का ज़माना है।

मदारी : क्या बुझारते बुझा रहा है। साफ़-साफ़ बताता क्यूं नहीं कि क्या बात है?

जमूरा : इंटरनेशनल मदारी, जिसके आगे नाच रही है दुनिया सारी, डॉनों का डॉन, सुपर डॉन।

[अमरीका का प्रवेश]

अमरीका : अरे दीवानो, मुझे पहचानो, कहां से आया, मैं हूं कौन, मैं हूं डॉन-मैं हूं डॉन, मैं हूं, मैं हूं, मैं हूं डॉन।

मदारी : ये तो अमरीकन डॉन है! लेकिन इसका जमूरा कहां है।

जमूरा : उस्ताद इसका जमूरा कोई ऐसा-वैसा जमूरा नहीं। एक ज़माने में वो ख़ुद बहुत बड़ा मदारी हुआ करता था। दुनिया का मदारी नंबर वन। लेकिन आजकल उसकी हालत थोड़ी डाउन है, इसलिए इसका जमूरा बना फिरता है।

[इंग्लैंड का प्रवेश।]

इंग्लैंड : जो तुमको हो पसंद वही बात करेंगे, तुम दिन को अगर रात कहो रात कहेंगे, जो तुमको हो पसंद वही बात कहेंगे।

अमरीका : जमूरे मैं कौन?

इंग्लैंड : डॉनों का डॉन, मैक डॉन।

अमरीका : मेरे पीछे कौन?

इंग्लैंड : दुनिया भर के छोटे-मोटे डॉन।

अमरीका : वो कौन?

इंग्लैंड : जर्मनी, फ्रॉस और इंग्लिस्तान।

अमरीका : मेरा मालिक कौन?

इंग्लैंड : दुनिया भर के मल्टीनेशनल्स।

अमरीका : जमूरे लौट आ।

इंग्लैंड : लौट आया।

अमरीका : देख तेरा ध्यान किधर है?

इंग्लैंड : देख लिया।

अमरीका : क्या देखा?

इंग्लैंड : मदारी के हाथ में कुत्तों की ज़ंजीर।

अमरीका : पब्लिक को ज़रा मेरे कुत्तों का इतिहास बता?

इंग्लैंड : उस्ताद तेरे कुत्तों की लिस्ट इतनी लंबी है कि बताते-बताते रात से सुबह हो जाएगी।

अमरीका : दो चार नाम तो गिना, पब्लिक को कुछ तो चले पता।

इंग्लैंड : तो ले उस्ताद। फ़िलीपींस में मार्कोस, चिली में पिनोशे और साउथ अफ़्रीका में तूने पाला नस्ली कुत्ता बौथा और पाकिस्तान में तो तेरे कुत्तों की लंबी फ़ेहरिस्त है।

अमरीका : जमूरे, लेकिन इनमें सबसे ख़तरनाक और ख़ूंरेज़ कुत्ता कौन?

इंग्लैंड : तो ले उस्ताद मैं पेश करता हूं तेरा सबसे ख़तरनाक और

खूंरेज़ कुत्ता जिसने बर्बाद किया बामियान कुत्ता-ए-. ... तालिबान।

तालिबान का प्रवेश।

तालिबान : याहू-याहू, भौं भौं भौं... भौं भौं भौं... भौं भौं भौं

अमरीका : शाबास-शाबास-शाबासऋ बुश ख़ुश हुआ। तुझपे लाखों डॉलर्स लुटाने का प्रूळट हमको मिला और जिस बहादुरी से तूने कम्युनिस्टों को अपने देश से भगाया उससे हम बेहद खुश हुआ। अब तू इस देश पर राज करेगा, इसे बर्बाद करेगा और हमारी पेट्रोल और गैस पाइप लाइनों को यहां से गुज़रने की आज़ादी देगा। आज़ादी, फ्रीडम हा हा हा फ्रीडम।

तालिबान अमरीका की ओर बंदूक़ कर देता है।

अमरीका : ये क्या करता है। मेरा कुत्ता और मुझी को भौं। हे तालु-तालु, तालु---

अमरीका, तालिबान फ्रीज़। जमूरे-मदारी का प्रवेश।

मदारी : फिर क्या हुआ?

जमूरा : ख़ुदा की क़सम ग़ज़ब ढा गया। इसे मारकर..... कर... .. कर..... बेशर्म खा गया।

मदारी : खा गया। लेकिन ये तो ज़िंदा है?

जमूरा : ये जीना भी कोई जीना है उस्ताद।

अमरीका : आज न छोडूंगा तुझे दम दमा दम
तूने क्या समझा है मुझे दम दमा दम
दिल में है तूफ़ान भरा दम दमा दम
फोडूंगा सर पे तेरे मैं बम बमा बम-२
बम बमा बम ऋ.....बम बम बम बम बम बम बम ।

अमरीका, तालिबान को मारता है। दोनों का प्रस्थान।

मदारी : जमूरे इन सबने अपना अपना गाना गाया तूने क्या गाया?

जमूरा : उस्ताद मैं क्या गाता, गाना तो दुनिया भर की जनता गा रही है।

मदारी : कौन सा,

जमूरा : दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई, काहे अमरीका बनाईऋ तूने काहे अमरीका बनाई।

मदारी : तू ठीक कहता है जमूरे, इस साले अमरीका के चक्कर में हम बेरोज़गार हो जाएंगे, जल्दी से खेल शुरू कर। चल लेट जा।

जमूरा : *;काली चादर ओढ़करद्ध* लेट गया।

मदारी : बात नहीं ज़ुल्फ की, सर मरोड़ा सांप का,
कैसा कुडंल मार के, बैठा है जोड़ा सांप का।
मेहरबानो क़दरदानो जब ये चमेली की जड़ों में छुप के बैठता है,
तो इसके काटे का पानी नहीं मांगता।
लेकिन इंसान का बच्चा इससे खेलता है, किसलिए,
पापी पेट के लिए।
तो हिंदू को क़सम भगवान की, मुसलमान को पाक वुळरान की।
इससे पहले कि खेल शुरू किया जाए,
ज़रा ताली तो बजाना।
हां तो जमूरे खेल शुरू किया जाए?

जमूरा : उस्ताद शुरू तो किया जाए, मगर तमाशबीन बड़े ख़ौफ़ज़दा हैं।

मदारी : क्यूं क्यूं?

जमूरा : उस्ताद तूने सुनी नहीं इनकी तालियों की आवाज़? कैसी मरी मरी तालियां बजा रहे हैं। जैसे ये मजमा नहीं पार्लियामेंट है, जहां कभी भी आतंकवादी हमला बोल दें।

मदारी : मेहरबानो क़दरदानो मेरे जमूरे में यही एक बुरी आदत है। इसलिए फेंक कर अपने डर को परे हो जाइए अपने ख़ौफ़ से आज़ाद। क्यूंकि इस मजमे की सिक्यूरिटी, दिल्ली पुलिस की नहीं, है उस्ताद गोरखधंधे के जादुई तिलिस्म के हाथ। इसलिए ज़रा ज़ोर से ताली तो बजाइए। क्यूं भई जमूरे, अब तो ख़ुश है?

जमूरा : हां उस्ताद मज़ा आ गया।

मदारी : तो लेट जा। गिलि गिलि गिलि गिलि,फू!
उगते सूरज को नमस्कार, डूबते को सलाम।
मुसलमान को आदाब, हिन्दू को राम राम।
मेहरबानो क़दरदानो, मैं जादूगर हूं , जादूगर जादू दिखाता हूं।
लड़के को लड़की और कुत्ते को बकरी बनाता हूं। जमूरे देख तेरा ध्यान किधर है?

जमूरा : देख लिया।

मदारी : क्या देखा?

जमूरा : जादूगर के हाथ में कबूतर।

मदारी : ज़िंदा या मरा हुआ?

जमूरा : ज़िंदा लेकिन डरा हुआ।

मदारी : कबूतर को किसका डर है? बाज का?

जमूरा : नहीं उस्ताद। कबूतर को भी उसी का डर है जिससे ये पब्लिक डरी बैठी है।

मदारी : पब्लिक की सिक्यूरिटी के लिए तो मैंने मजमे को जादुई तिलिस्म से बांधा है।

जमूरा : उस्ताद तुम पर हँसी आती है। हा हा हा

मदारी : क्या बकता है?

जमूरा : बकता नहीं उस्ताद सच कह रहा हूं। तुम्हारा जादुई

तिलिस्म इनको डर से निजात नहीं दिला सकता।

मदारी : क्या मतलब? तू जानता नहीं मेरा जादुई तिलिस्म शैतानी बलाओं को मोड़ सकता है। बाज़ों के डैने तोड़ सकता है।

जमूरा : उस्ताद, न पब्लिक शैतानी बलाओं से डरी है और न कबूतर बाज़ से। इन्हें जिस चीज़ का डर है वो है पोटो। और उस पर तुम्हारे तिलिस्म का कोई असर नहीं।

मदारी : जमूरे! ज़बान संभाल के। वर्ना टुकड़े टुकड़े कर दूंगा। यूगोस्लाविया बना दूंगा।

जमूरा : उस्ताद अगर पोटो इस मजमे में आ गया तो तुम्हारा ये मजमा, एक मिनट में चौपट हो जाएगा।

मदारी : उस्ताद गोरखधंधे के मजमे को चौपट कर दे ये तो अमरीका में भी दम नहीं, फिर पोटो की क्या बिसात। तो फिर आज यही खेल सही, उठ और पोटो को इस मजमे में लेकर आ।

जमूरा : उस्ताद, न आज से तू मेरा गुरू न मैं तेरा चेला।

मदारी : अबे क्या कहता है, न मैं अमरीका और न तू ओसामा बिन लादेन, तेरा मेरा नाता इतनी आसानी से नहीं टूटेगा।

जमूरा : उस्ताद अगर तुम कहो तो मैं मजमे में काला भूत ला सकता हूं।

मदारी : ले आ।

जमूरा : जमुना जी का पानी पी के ज़िंदा रह सकता हूं।

मदारी : ज़िंदा रह।

जमूरा : रक्षा मंत्रालय में किस ताबूत पर किसने कितना खाया बताके तहलका मचा सकता हूं।

मदारी : मचा दे।

जमूरा : लेकिन पोटो को मजमे में लाने की बात मत करना।

मदारी : तो क्या तू चाहता है कि पब्लिक हमेशा ख़ौफ़ज़दा रहे। हमारा मजमा पेट की ख़ातिर न हो, कबूतर दाना न चुगे क्योंकि पोटो लगा है। अगर तू ये नहीं चाहता तो पोटो को यहां लाना होगा और उसकी असलियत का गाना पब्लिक के बीच गाना होगा।

जमूरा : मेरे बस का नहीं है उस्ताद।

मदारी : अच्छा तो अब तू देख मेरा कमाल, मैं अभी अपने जादू के ज़ोर से पोटो को बांधता हूं और उसे इस मजमे में पेश करता हूं□सात समंदर पार मछंदर अब तू अपने आप कलंदर।

जमूरा : लेने लगे गुरुओं का नाम।

मदारी : अबे तो मैं जादूगर हूं - असली जादूगर, ख़ानदानी जादूगर मेरे दादा के, परदादा के, परदादा ने अकबर बादशाह को जादू दिखाया था।

जमूरा : ज़रूर दिखाया होगा उस्ताद, मगर ये अटल राज है। अटल राजा के राज में पोटो पर तुम्हारा जादू नहीं चलेगा।

मदारी : तो तू ही कुछ कर। फेंक अपनी चद्दर को परे और कर कुछ ऐसा कमाल कि पब्लिक का ख़ौफ़ हो फुर्र और देश के दुश्मन पामाल। ऐ गिलि गिलि गिलि गिलि फू!

जमूरा : अच्छा तो उस्ताद अब तू देख मेरा कमाल।
उस्ताद गोरखधंधे की पारदर्शी नज़र के कंधे पर बैठकर,
अपनी रेशमी मूछों के बालों को ऐंठकर
पता लगाऊंगा पोटो की सच्ची कहानी,
जो वो कहेगा इस मजमे में अपनी ही ज़ुबानी
कौन है जिसने बनाया ये काला क़ानून
और चटाया है इस वहशी को पब्लिक का ख़ून
पेट की बात मजमे में क्यों है मुहाल,
डर से जमूरे का क्यों बुरा हाल ?
मदारी परेशां क्यों, पब्लिक ख़ामोश क्यों,
मज़हबी जुनून में ये मुल्क मदहोश क्यों?
कौन है जो इनकी आंखों पर बांध रहा पट्टी,
कौन है जिसने पिलाई है नशीली घुट्टी ?
तो कहां है वो ख़तरनाक पोटो का बच्चा,
अब नहीं देने पाएगा मुझे गच्चा
ख़ाली हाथ लौटा तो उस्ताद चबा जाएगा मुझे कच्चा
समझाएगा मुझे मेरी औक़ात, देगा चूतड़ों पर एक लात
तो मेहरबानो, क़दरदानो अपने दुश्मनों को पहचानो,
बताओ ब्लैक कमांडो कहां कर रहे हैं गश्त
कहां बिक रहे हैं जवानों के कफ़न
कहां मनाए जा रहे हैं मौत के जश्न
त्रिशूलों की कहां तेज़ हो रही है धार
रामशिलाएं कहां हो रही हैं तैयार
कौन सी खूंटी पर टंगी है ढीली नेकर
बता दो, बता दो ताकि ये नाचीज़ भी
जेम्सबांड का दायां- बायां कहलाए

□पोटो और पुलिसवाले का प्रवेश।□

पुलिसवाला : दाएं से आगे बढ़ेगा... आगे बढ़। लेफ़्ट राइट लेफ़्ट। हां तो भइया। मैं हूं पुलिसवाला, सिक्यूरिटी के लिए गया पाला। बैरिकेड हमारे बहुत तगड़े, चूहे भी न हमने कभी पकड़े। नया क़ानून अब हाथ में आया, आतंकवादियों का करूंगा सफ़ाया। राष्ट्र के दुश्मनों को चेतावनी हमारी, गश्त हमारी है जारी - गश्त हमारी है जारी।

जमूरा : छिः... छिः *;इशारा करता है।द्ध*

पुलिसवाला : अबे कौन है बे?

जमूरा : भाईसाहब। अबे ओ बहरे।
पुलिसवाला : कोई तो है। कौन है बे?
जमूरा : ठुल्ले!
पुलिसवाला : ठुल्ले किसने कहा? अभी देखता हूं साले तुझे। ठुल्ले कहता है। *;जमूरे को मारने के लिए दौड़ता है।द्ध*
जमूरा : नहीं, नहीं, इंस्पेक्टर साहब!
पुलिसवाला : हां - हां इंस्पेक्टर।
जमूरा : इंस्पेक्टर साहब दिखा दीजिए न।
पुलिसवाला : क्या?
जमूरा : वही जो आपने छुपा के रखा है।
पुलिसवाला : क्या?
जमूरा : पोटो।
पुलिसवाला : पोटो! ये बच्चों के खेलने की चीज़ नहीं है।
जमूरा : मैं बच्चा नहीं हूं जी।
पुलिसवाला : बच्चा नहीं है, अभी देखता हूं साले तुझे।
[जमूरे को मारने के लिए दौड़ता है, जमूरा उस पर मंत्र फूंकता है।]
जमूरा : गिरगिट की खाल का रंग, बाज़ की पलक की झलक।
बिच्छू का डंक, सांप का हलक़, अलख-खलख-
फ़लक़, झपक ना पाए पलक
गिलि गिलि गिलि गिलि फू।
;पुलिसवाला बेहोश हो जाता है।द्ध
मिल गया, मिल गया, मुझको पोटो मिल गया,
मैंने इक मंतर क्या पढ़ा, हर फ़र्दे मजमां हिल गया
इक बलब रोशन किया, उस्ताद जी के नाम का,
आज से जमूरा भी बन गया, आदमी इक काम का
;पोटो को पीठ पर लादता है।द्ध अरे बाप रे, कितना भारी है रे। *;पोटो को मदारी के पास ले जाता है।द्ध* उस्ताद जी, ओ उस्ताद जी, मैं ले आया हूं पोटो, लो खींच लो इसका फ़ोटो।
मदारी : शाबास जमूरे। अब तू देख मेरे जादू का कमाल।
ऐ पत्थर दिल, पापी, पैशाचिक पोटो
मेरा जादू अब दिखलाएगा तेरा फ़ोटो
ऐ बर्बर, बेदर्द, बेरहम प्राणी
मेरे मंत्र से सुनेगी जनता तेरी कहानी
ऐ कमज़र्फ़, नराधम, हलकान
कर तू ही अपनी दास्तां बयान
हैफ़ मरदेम व जां दादेम रुसियाह तिलस्मी जादू बूद
पानी का पानी और दूध का दूध
गिलि गिलि गिलि गिलि फू!
पोटो : मेरा जन्म हुआ था सालो, सत्ता के गलियारे में
हिटलर की औलादों की, मैं हूं औलाद
जनता मेरी जन्म की बैरी, दुश्मन मैं आज़ादी का
हुकूमत के जलसाघर को, करता मैं आबाद
पोटो मेरा नाम है भई पोटो मेरा नाम, बोलो *;सब गाते हैंद्ध*
पोटो तेरा नाम है भई पोटो तेरा नाम
दमन का हथकंडा हूं, पुलिस का मैं डंडा हूं
संडा मुस्टंडा हूं , गुंडा मुछमुंडा हूं
हाकिम के इशारों का, मैं हूं गुलाम
पोटो मेरा नाम है भई पोटो मेरा नाम, बोलो...
आतंकवाद बहाना है, दहशत मुझे फैलाना है
जनता को बहकाना है, यू. पी. को बचाना है
नेकरधारी पल्टन का, मैं हूं नया राम
पोटो मेरा नाम है भई, पोटो मेरा नाम, बोलो...
मैं जो बोलूं रात तो हो, मैं जो बोलूं बात सो हो
राष्ट्र के दुश्मनों की, धर्म ये हो जात वो हो
श्र(ा के सवालों में, जिरह है हराम
पोटो मेरा नाम है भई पोटो मेरा नाम, बोलो...
रैली हड़ताल न हो, रोटी का सवाल न हो
जी का जंजाल न हो, झंडा कोई लाल न हो
मजमे, नाटकों पर पाबंदी है आयाम
पोटो मेरा नाम है भई पोटो मेरा नाम, बोलो...
जमूरा : उस्ताद तूने तो बर्बाद कर दिया, इस मुसीबत को आज़ाद कर दिया। अब ये कमबख़्त जाने कैसा कहर ढाये, इस मजमे को अब भगवान ही बचाए।
[बेहोश पुलिसवाला उठता है।]
पुलिसवाला : अरे मेरे पोटो कहां है तू। जनवाद के टुकड़े-टुकड़े करने वाली मेरी कुल्हाड़ी, जम्हूरियत पर चलने वाली मेरी प्यारी आरी, अरे कहां है तू। *;अचानक पोटो को देखता हैद्ध* तू तो यहां है रे। तुझे यहां कौन लेकर आया?
जमूरा : मैं लेकर आया हूं ये पोटो और अब जनता ने देख ली है इसकी फ़ोटो।
पुलिसवाला : साले तेरी जनता को तो खिलाऊं गधे की लीद। और तुझे अभी देखता हूं, पिछली बार तो तू बच गया था। साले ठुल्ले कह रहा था *;जमूरे को पीटता हैद्ध* ए पोटो आ और लग जा इस साले पे। *[पोटो जमूरे पर सवार होता है। दोनों बाहर जाते हैं।]* सालो तुम लोग मुंह क्यों फाड़ रहे हो। अगर किसी ने दांत दिखाए उसे पोटो लगाकर अंदर कर दूंगा, समझे।
[पुलिसवाला जाता है। मदारी का प्रवेश।]
मदारी : जमूरे, अरे ओ जमूरे। भाई साहब क्या आपने मेरे जमूरे को देखा है? अभी वो चीख़ रहा था। वो ज़रूर किसी ख़तरे में है। *;पब्लिक बताती है कि पुलिस पकड़कर ले*

गई है।द्ध पुलिस! जमूरे को आज़ाद करवाने के लिए कोई चक्कर चलाना होगा। किसी मंत्री के सर पर डमरू बजाना होगा। मंत्री जी...ऐं... पी° एम° ऑफ़िस ख़ाली। घर पर होगा। मंत्री जी..., घर पर भी नहीं। ज़रूर चुनावी दौरे पर गया होगा वहीं पकड़ता हूं। मंत्री जी...

[भगवा टोपी पहने मंत्री का प्रवेश।]

मदारी : मंत्री जी, मैं लुट गया, मैं बर्बाद हो गया। मेरी रोज़ी रोटी छीन ली। मेरे बुढ़ापे की लाठी तोड़ दी। मेरे जमूरे पर पोटो लगाकर पुलिस वाले कर रहे हैं बकवास, कह रहे हैं मेरा जमूरा फैला रहा है आतंकवाद।

मंत्री : आतंकवाद! जनता आतंकवाद से ग्रस्त है, हम भी आजिज़ आ चुके हैं। राष्ट्र के दुश्मनों को हम सबक़ सिखाना चाहते हैं। हम शांति चाहते हैं, इसलिए यु(के लिए तैयार हैं। विरोधी पार्टियां हरदम विरोध ही करती हैं। हमने इतिहास सही किया, उन्होंने विरोध किया। हमने सैनिकों के लिए कफ़न मुहैया करवाया, उन्होंने विरोध किया। हमने बाल्को बेचा, उन्होंने विरोध किया। हमने मंदिर की बात की, उन्होंने विरोध किया। आख़िर विरोध की भी कोई सीमा होती है, और सीमा पार से आने वाले आतंकवाद को हम क़तई बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसलिए आज हम पोटो लाए हैं, कल पोटो का बाप लाएंगे।

मदारी : *;काटते हुएद्ध* हैफ़ मरदेम व जां दादेम
रुसियाह तिलिस्मे जादू बूद,
पानी का पानी और दूध का दूध,
गिलि गिलि गिलि गिलि फू।
अभी क़ैद करता हूं वाणी इस मक्कार पाखंडी की। उस्ताद गोरखधन्धे ने सात पुश्तों से मजमे में जादू दिखाया लेकिन अपने मजमे में झूठ कभी बर्दाश्त नहीं कर पाया। अभी इस पर सत्यवादी वशीकरण फूंकता हूं, सच्चाई सामने आएगी, झूठ की कलई खुल जाएगी।
हिंग टिंग छट सच बोल झटपट
सिमसिम फोड़ झूठी बात को तू छोड़
नीम करेला छिपकली, बिच्छू सांप बिझार
कीकड़ कोयल केंचुली, सौ पर सात सवार
अंजन मंजन दुख भंजन, संकट मोचू के बाप
शक्ति दीजे नीलकंठ, मुंह से सच फूटे आप
ओम नमोः शिवाय... ओम नमोः शिवाय... ओम नमोः शिवाय। बोल जो कहूंगा सच कहूंगा सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा।

मंत्री : जो कहूंगा सच कहूंगा, सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा।

मदारी : तू कौन?

मंत्री : मैं कौन?

मदारी : मंत्री लौट आ।

मंत्री : लौट आया।

मदारी : बैठ जा।

मंत्री : बैठ गया।

मदारी : खड़ा हो जा।

मंत्री : खड़ा हो गया।

मदारी : जो पूछूं बतलाएगा।

मंत्री : बतलाएगा।

मदारी : तू मंत्री क्यूं?

मंत्री : मैं मंत्री पेट की ख़ातिर।

मदारी : ग़लत। तू मंत्री देश की ख़ातिर।

मंत्री : नहीं। मैं मंत्री पेट की ख़ातिर। देश गया भाड़ में।

मदारी : तेरा मालिक कौन?

मंत्री : मेरे मालिक सेठ साहूकार, सरमायादार, ज़मींदार और बाज़ार, और इन सब का मालिक अमरीका।

मदारी : ग़लत। तेरा मालिक हिंदुस्तान की जनता।

मंत्री : नहीं। जनता को तो मैं जूते की नोक पर रखता हूं ।

मदारी : तू चुनाव कैसे जीता?

मंत्री : दंगा करवा के। भाई को भाई से लड़वा के।

मदारी : इस बार भी तू दंगे करवा के जीतेगा?

मंत्री : अब तो जनता मुझे पहचान गई है, मेरी असलीयत जान गई है। तमिलनाडु, बंगाल, असम, बिहार में हरा चुकी है। अब तो यू. पी. हारने की बारी है। जनता ने कर दी तैयारी है। अब तो कुछ और जुगत बिठानी है।

मदारी : क्या जुगत बिठाएगा?

मंत्री : पोटो लगाएगा।

मदारी : पोटो, किसके ख़िलाफ़?

मंत्री : पोटो उसके ख़िलाफ़ जो राष्ट्र का दुश्मन।

मदारी : राष्ट्र का दुश्मन कौन?

मंत्री : वो जो यु(के ख़िलाफ़ बोले, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो पोखरन के ख़िलाफ़ बोले, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो रोटी की बात करे, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो हड़ताल करे, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो रोज़गार मांगे, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो मुसलमान, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो ईसाई, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो हमारा विरोध करे, वो राष्ट्र का दुश्मन।

मदारी : *;काटते हुएद्ध* हैफ़ मरदेम व जां दादेम, रुसियाह तिलिस्मे जादू बूद, पानी का पानी और दूध का दूध, गिलि गिलि गिलि गिलि फू।

मंत्री : हम कहां हैं?

मदारी : जनता की अदालत में।

मंत्री : हां तो भाईयो, मैं कह रहा था...

मदारी : और जनता देती है तेरे चूतड़ों पर इक लात।
अबे नामाव़ूळल देश में दंगे भड़काना चाहता है आग लगाना चाहता है। दफ़ा हो जा मेरे मजमे से।

□मंत्री भाग जाता है। मदारी अपने जमूरे को ढूंढ़ता है।□

मदारी : जमूरे... ओ जमूरे।

जमूरा : उस्ताद जी मुझे बचा लो।

मदारी : अबे कहां है तू...?

जमूरा : उस्ताद जी पीछे।

मदारी : नीचे? अच्छा तो तू यहां छिपकर बैठा है।

जमूरा : उस्ताद छिपकर नहीं। मुझ पर पोटो लगाकर, इसको मेरे ऊपर बैठा दिया है।

मदारी : अरे ये भारी भरकम पोटो मेरे जमूरे की पीठ पर अपना पैंदा रखकर कैसा इतरा रहा है रे।

जमूरा : उस्ताद जी मुझे बचाओ।

मदारी : कैसे बचाऊं। इस पर तो मेरा मंत्र भी काम नहीं करेगा।

जमूरा : उस्ताद जी कुछ करो।

मदारी : क्या करूं? हां इस पर जनता की एकता का जादू असर करेगा। मेहरबानो-क़दरदानो आज तक ये मदारी अपने जमूरे की जान की ख़ातिर आपसे चवन्नी, अठन्नी, एक रुपया और दो रुपया मांगता आया है आज आपसे मांगता है सिर्फ़ चार आदमी। बाबू साहब जमूरे की ज़िंदगी का सवाल है...।

□चार आदमी आते हैं।□

सब : पोटो हम तेरी असलियत जान गए हैं, तेरे हिटलरी चेहरे को पहचान गए हैं।

;सभी जाकर पोटो को घेर लेते हैं।द्ध

मदारी : ए अत्याचारी, अन्यायी, आताताई,
जनता के जादू के आगे मांगेगा तू दुहाई
मजमे रहेंगे सदा आबाद, इंक़लाब ज़िंदाबाद
रोटी के उठेंगे सवाल, परचम होंगे सुर्ख़ लाल
देख के तू होगा पामाल, पोटो तू होगा पामाल
गिलि गिलि गिलि फू

□पोटो डरकर भागता है। जमूरा और मदारी एक दूसरे से गले मिलते हैं।□

मदारी : मेहरबानो - क़दरदानो आज तो आप लोगों की ताक़त से मेरे जमूरे की जान बची और साथ ही साथ इस मदारी की भी। लेकिन ये मजमा ख़त्म करने से पहले मैं एक बात आप लोगों से कहना चाहूंगा कि रोटी का सवाल उठाने वाले और अपने हक़ की लड़ाई लड़ने वाले इस देश में जगह-जगह हैं, लेकिन अब ये पैशाचिक पोटो उनको अपना निशाना बनाएगा तो हो सकता है कि उसकी असलियत बताने वाला ये मदारी और ये जमूरा आपको सड़क पर न दिखाई दे। लेकिन इस पैशाचिक पोटो को जन्म देने वाले आपके बीच ज़रूर आएंगे। तब आपको पहचानना होगा कि आपका दुश्मन कौन।

o

पोटा मेरा नाम

;जन नाट्य मंचॠ मार्च २००२ॠ ६ कलाकारॠ २५ मिनट।द्ध

गुजरात नरसंहार के बाद नाटक ***आतंकवाद के बहाने*** *का परिवर्तन करके इस प्रकार खेला गया : अमरीका, इंग्लैंड और तालिबान का सीन काटा गया। नाटक शुरू होता है मदारी-जमूरे के प्रवेश से। एक दो संवाद के बाद मदारी कहता "बात नहीं जुल्फ़ की......" फिर नाटक ज्यूं का त्यूं चलता है पोटा के गाने तक। ध्यान दें कि पोटो अब पोटा हो गया है प्रिवेंशन ऑफ़ टेररिज़्म एक्ट। पोटा के गाने के बाद उसका प्रस्थान। आगे का नाटक इस प्रकार है :-*

मदारी : तू ठीक कहता है जमूरे ये तो बड़ा ही ख़तरनाक प्राणी निकला। लेकिन कौन है जिसने इस काग़ज़ी नरपिशाच को पैदा किया और जनता को ख़ौफ़ज़दा किया। तू जा उसे उस मजमे में लेकर आ।

जमूरा : तो उस्ताद, खोल दो तिलिस्मी गैराज और निकाल बाहर करो उड़न खटोले को।

मदारी : काहे?

जमूरा : जमूरा अखिल भारतीय दौरे पर जाएगा।

मदारी : काहे?

जमूरा : पकड़ के लाने एक मंत्री को।

मदारी : काहे?

जमूरा : जवाबदेही की ख़ातिर।

मदारी : लड़के, तेरे इरादे तो नेक हैं, पर तू ये सब करेगा कैसे?

जमूरा : उड़न खटोले पे गश्त मारेगा बंदा
दूर दूर फैलाएगा अपना जादुई फंदा
किसी को देगा घूस और किसी को देगा चंदा
और निकाल लाएगा हर नदी-नाले,
पहाड़ी-खाले या मकड़ी के जाले से
किसी न किसी मंत्री, या मंत्रीनुमा संतरी
या ऐसे ही किसी षड़यंत्री को
और हाज़िर करेगा जनता की अदालत में।

मदारी : हां तो दोस्तो, मैं उड़नखटोला निकालता हूं, आप ज़रा ज़ोर से ताली बजाइये।

;जमूरा अपने-आप को काली चादर में ढककर घूमता है।द्ध

मदारी : जमूरे लौट आ।

जमूरा : लौट आया।

मदारी : क्या देखा?

जमूरा : मंत्री कार्यालय खाली है। मंत्री गुजरात दौरे पर हैं।

मदारी : अब तू क्या करेगा?

जमूरा : गुजरात जाऊंगा।

मदारी : हां तो मेहरबानो एक बार फिर से ताली बजाइए। अब मेरा जमूरा चला है गुजरात। *;मदारी जाता है त्रिशूलधारी मंत्री का प्रवेश।द्ध*

जमूरा : पहुंच गया गांधीजी के गुजरात। लेकिन ये क्या? चारों तरफ़ आग, मार पीट, ख़ून ख़राबा, क़त्लेआम। अबे ओ मंत्री ये क्या कर रहा है तू?

मंत्री : कौन बोला। हिंदू या मुसलमान।

जमूरा : जमूरे का कोई धर्म नहीं होता। तू चुपचाप मेरे साथ चल। नहीं तो फेंकूंगा तुझ पर वशीकरण मंत्र।

मंत्री : तेरे मंत्र की ऐसी की तैसी। अभी दिखाता हूं तुझे।

जमूरा : दिल्ली, यू.पी., पंजाब के चुनावों में भी लगा चुकी है जनता तुझे लात और दिखा चुकी है तुझे तेरी औक़ात।

मंत्री : लेकिन ये है गुजरात, और बाक़ी है हमारा जादू, जो फैला सकता है मज़हबी जुनून, बहा सकता है दूध मुंहे बच्चों का ख़ून। जबरन बना सकता है क़ानून, ज़िंदा तुम्हें सकता है भून। संटी को बना सकता है सोटा, बनाया जिसने पोटो को पोटा। *;पोटा का प्रवेशद्ध* पोटा लग जा इस पर।

;पोटा जमूरे को अपने कब्ज़े में लेता है। तीनों जाते हैं।द्ध

मदारी : जमूरे... अजी मेरे जमूरे को किसी ने देखा है क्या? वो गुजरात गया था मंत्री को लाने। मुझे मंत्री के पास ही जाना चाहिए। मंत्री जी मैं लुट गया बरबाद हो गया। मेरी रोज़ी रोटी छीन ली। मेरे बुढ़ापे की लाठी तोड़ दी। मेरे जमूरे को बचाइये।
;मंत्री का प्रवेशद्ध

मंत्री : मैं यहां टूटे दिल से तुम्हारा ग़म बांटने आया हूं। संकट की इस घड़ी में तुम अकेले नहीं हो, पूरा देश साथ है, मैं खुद तुम्हारे साथ हूं। समय बहुत बड़ा मरहम है। तुम्हारे भाई का क़त्ल कर दिया गया, समय इस घाव को ढक

लेगा। तुम्हारा पूरा परिवार जला दिया गया। कैसे कोई किसी को ज़िंदा जला सकता है, ये मेरे लिए एक रहस्य है, जैसे तुम्हारे लिए भी। कोख से निकाल कर मारे गए बच्चे को पीड़ा नहीं होती। वो जो भविष्य था अब भूत है और हमें उसे भूल जाना है। बीती ताहि बिसार के आगे को सुधि ले। हमें राजधर्म का पालन करना है। ये शब्द अर्थ पूर्ण हैं। फिर हमें विदेश में भी अपना मुंह दिखाना है, दुनिया वाले क्या सोचेंगे। लेकिन इन विदेशियों को इस बात की कोई चिंता नहीं। हमारे पद का नहीं तो हमारी उम्र का तो लिहाज़ किया होता। जितनी उनकी उम्र नहीं उतने वर्षों से हम राजनैतिक जीवन में हैं। विरोधी पार्टियां हरदम विरोध ही करती हैं। हमने इतिहास सही किया, उन्होंने विरोध किया। हमने सैनिकों के लिए कफ़न मुहैया करवाया उन्होंने विरोध किया। हमने बाल्को बेचा, उन्होंने विरोध किया। हमने मंदिर की बात की, उन्होंने विरोध किया। आख़िर विरोध की भी कोई सीमा होती है। और सीमा पार से आने वाले आतंकवाद को हम कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसलिए आज हम पोटा लाए हैं, कल पोटा का बाप लाएंगे।

मदारी : *;काटते हुएद्ध* हैफ़ मरदेम व जां दादेम, रुसियाह तिलिस्मी जादू बूद। पानी का पानी और दूध का दूध, गिलि गिलि गिलि गिलि फू। अभी क़ैद करता हूं वाणी इस मक्कार पाखण्डी की। उस्ताद गोरखधंधे ने सात पुश्तों से मजमे में जादू दिखाया लेकिन अपने मजमे में झूठ कभी बर्दाश्त नहीं कर पाया। अभी इस पर सत्यवाची वशीकरण फूंकता हूं, सच्चाई सामने आएगी, झूठ की कलाई खुल जाएगी।

हिंग टिंग झठ सच बोल झटपट,
सिमसिम फोड़ झूठी बात को तू छोड़
नीम करेला छिपकली, बिच्छू सांप बिझार,
कीकड़ कोयल कैंचुली, सौ पर सात सवार
अंजन मंजन दुख भंजन, संकट मोचू के बाप,
शक्ति दीजे नीलकंठ मुंह से सच फूटे आप
ओम नमोः शिवाय.... बोल जो कहूंगा सच कहूंगा सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा।

मंत्री : जो कहूंगा सच कहूंगा, सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा।
मदारी : तू कौन?
मंत्री : मैं कौन?
मदारी : मंत्री लौट आ।
मंत्री : लौट आया।
मदारी : बैठ जा।
मंत्री : बैठ गया।
मदारी : खड़ा हो जा।
मंत्री : खड़ा हो गया।
मदारी : जो पूछूं बतलाएगा?
मंत्री : बतलाएगा।
मदारी : तू मंत्री क्यूं?
मंत्री : मैं मंत्री अपनी ख़ातिर। संघ परिवार की ख़ातिर।
मदारी : ग़लत। तू मंत्री देश की ख़ातिर।
मंत्री : नहीं। मैं मंत्री अपनी ख़ातिर। देश गया भाड़ में।
मदारी : तेरा मालिक कौन?
मंत्री : मेरा मालिक सेठ साहूकार सरमायादार, ज़मींदार और बाज़ार और संघ परिवार।
मदारी : ग़लत। तेरा मालिक हिंदुस्तान की जनता।
मंत्री : नहीं। जनता को तो मैं जूते की, नहीं नहीं, अपने त्रिशूल की नोक पर रखता हूं।
मदारी : तू मंत्री कैसे बना?
मंत्री : दंगा करवा के। भाई को भाई से लड़वा के।
मदारी : और कितने दंगे करवाएगा।
मंत्री : दंगे तो पुराने पड़ गए अब कुछ और कुचक्र चलाना होगा। तमिलनाडू, बंगाल, असम, बिहार, दिल्ली, पंजाब, यू.पी. के चुनाव में जनता हमें हरा चुकी है। गद्दी को बचाने को कुछ और जुगत बैठानी होगी।
मदारी : क्या जुगत बिठाएगा?
मंत्री : नरसंहार कराएगा फिर पोटा लगाएगा।
मदारी : नरसंहार किसका, पोटा किसके ख़िलाफ़?
मंत्री : उसके ख़िलाफ़ जो राष्ट्र का दुश्मन।
मदारी : राष्ट्र का दुश्मन कौन?
मंत्री : वो जो यु(के ख़िलाफ़ बोले, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो पोखरन के ख़िलाफ़ बोले, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो रोटी की बात करे, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो हड़ताल करे, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो रोज़गार मांगे, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो मुसलमान, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो ईसाई, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो दंगों का विरोध करे, वो राष्ट्र का दुश्मन। वो जो हमारा विरोध करे, वो राष्ट्र का दुश्मन। एवरी एक्शन हैज़ एन ईक्वल एंड अपोज़िट रिएक्शन। ये स्वाभाविक है, ज़िंदा जलाया जाना स्वाभाविक है, बच्चों को कोख से निकाल कर काट देना स्वाभाविक है। लूटमार, बलात्कार स्वाभाविक है, ख़ून ख़राबा होता है तो हो जाने दो। ये आन बान और शान का सवाल है। इस देश में रहना है तो जैसे हम कहें वैसे रहना होगा।
मदारी : *;काटते हुएद्ध* हैफ़ मरदेम के जांदादेम,

रुसियाह तिलिस्मी जादू बूद।
पानी का पानी और दूध का दूध।
गिलि गिलि गिलि गिलि फू।

मंत्री : हम कहां हैं?

मदारी : जनता की अदालत में।

मंत्री : हां तो भाईयो, मैं कह रहा था... कि मैं टूटे दिल से आपका ग़म बांटने आया हूं।

मदारी : अबे चुप! अगर आगे बोला तो फिर से तुझ पर सत्यवाची वशीकरण फूंक दूंगा।

मंत्री : तेरे वशीकरण की ऐसी की तैसी। मेरे पोटा मंत्र के आगे तेरा कोई मंत्र नहीं चलेगा। तेरे जमूरे पर तो पहले ही लगा चुका हूं अब तू भी नहीं बचेगा।

मदारी : तेरे पोटा मंत्र से निपटने के लिए है मेरे पास जनता की एकता का मंत्र। तू देख मेरा कमाल... हां तो मेहरबानो क़दरदानो आज तक ये मदारी अपने जमूरे की जान की ख़ातिर आपसे चवन्नी, अठन्नी, रुपया, दो रुपया मांगता आया है। लेकिन आज आपसे मांगता हूं सिर्फ़ चार आदमी। जमूरे की जान बचाने की ख़ातिर सिर्फ़ चार आदमी।

;एक कलाकार दर्शक के बीच से ३-४ लोगों को उठाता है।ध्र

सब : पोटा हम तेरी असलियत जान गए हैं,
तेरे हिटलरी चेहरे को पहचान गए हैं।

;सभी पोटा और मंत्री को घेर लेते हैं।ध्र

मदारी : ऐ अत्याचारी, अन्यायी, आताताई,
जनता के जादू के आगे मांगेगा तू दुहाई
भाईचारा रहेगा आबाद, इंक़लाब ज़िंदाबाद
रोटी के उठेंगे सवाल, परचम होंगे सुर्ख़ लाल
देख के तू होगा पामाल, पोटा तू होगा पामाल।
गिलि गिलि गिलि गिलि फू!

;पोटा और मंत्री डरकर भागते हैं और जमूरा और मदारी एक दूसरे से गले मिलते हैं।ध्र

मदारी : मेहरबानो क़दरदानो, आज तो जनता की एकता के जादू के बल पर मैंने अपने जमूरे को बचा लिया। और इस मजमे से नेता और पोटा को भगा दिया। लेकिन दरहक़ीक़त ये आज भी मौजूद हैं। इन्हें रोकने के लिए चार लोगों की एकता की नहीं, लाखों-लाख जनता की एकता की ज़रूरत है। इसलिए उठिए और इन्हें रोकिए ताकि गुजरात फिर से न दोहराया जा सके।

o